म-दनी चेनल देखते रहिये

163 MADANI PHOOL (HINDI)

163 म-दनी फूल

- पानी पीने के 13 म-दनी फूल 02
- चलने की 15 सुन्नतें और आदाब 05
- तेल डालने और कंघी करने के 19 म-दनी फूल 09
- ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा के 22 म-दनी फूल 14
- लिबास के 14 म-दनी फूल 19
- इमामे के 25 म-दनी फूल 23
- अंगूठी के 19 म-दनी फूल 28
- मिस्वाक के 20 म-दनी फूल 32
- क़ब्रिस्तान की हाज़िरी के 16 म-दनी फूल 35

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी

مكتبة المدينة

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जे़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

163 म-दनी फूल

येह रिसाला **(163 म-दनी फूल)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब या ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-**1**, गुजरात,
MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

163 म-दनी फूल

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (40 सफ़्हात) आख़िर तक पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़ी सुन्नतें सीखने को मिलेंगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे ।" (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج ٥ ص ٢٧٧ حديث ٨١٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये, पेश कर्दा हर हर म-दनी फूल को सुन्नते रसूले मक़्बूल عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इ़लावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है । येह मस्अला याद रखिये कि जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "सुन्नते रसूल" नहीं कह सकते ।

इस रिसाले के तमाम म-दनी फूल हर मुसल्मान के लिये क़ाबिले क़बूल हैं और इन के मुत़ाबिक़ अ़मल पर जन्नत के ह़ुसूल की उम्मीद है । मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात की ख़िदमात में अ़र्ज़ है कि अपने सुन्नतों भरे बयान के इख़्तिताम पर मौक़अ़ की मुना-सबत से इस रिसाले

में दिये हुए किसी भी एक उ़न्वान के म-दनी फूल बयान फ़रमा दिया करें। हर उ़न्वान के पहले और बा'द दी हुई सुतूर भी पढ़ कर सुना दिया करें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़ुम या रसूलल्लाह" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से पानी पीने के 13 म-दनी फूल

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ❁ ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** पढ़ो और फ़राग़त पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा करो (ترمذی ج۳ ص۳۵۲ حدیث ۱۸۹۲) ❁ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या इस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है। (ابوداؤد ج۳ص ٤٧٤ حدیث۳۷۲۸) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती

है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो, (या'नी सांस लेते वक़्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूंकों से ठन्डा न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे ठन्डी हो जाए फिर पियो। (मिरआत, जि. 6, स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में ह़रज नहीं ❁ पीने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ लीजिये ❁ चूस कर छोटे छोटे घूंट पियें, बड़े बड़े घूंट पीने से **जिगर की बीमारी** पैदा होती है ❁ पानी तीन सांस में पियें ❁ बैठ कर और सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ❁ लौटे वग़ैरा से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी पीना 70 मरज़ से शिफ़ा है कि येह आबे ज़मज़म शरीफ़ की मुशा-बहत रखता है, इन दो[2] (या'नी वुज़ू का बचा हुवा पानी और ज़मज़म शरीफ़) के इ़लावा कोई सा भी पानी खड़े खड़े पीना मक्रूह है। (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 575, जि. 21, स. 669) येह दोनों पानी क़िब्ला रू हो कर खड़े खड़े पियें ❁ पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़्सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है (اِتحافُ السَّادَة للزَّبيدی ج ٥ ص ٥٩٤) ❁ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये ❁ **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर पीना शुरूअ़ करे पहली सांस के आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه दूसरे के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم और तीसरे सांस के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِين पढ़े (اِحیاءُ الْعُلُوم ج ٢ ص ٨) ❁ **गिलास** में बचे हुए मुसल्मान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वाह म ख़्वाह फैंकना न चाहिये ❁ मन्क़ूल है : سُؤْرُ الْمُؤْمِنِ شِفَاءٌ या'नी मुसल्मान के झूटे में

शिफ़ा है ❁ (الفتاوى الفقهية الكبرى لابن حجر الهيتمى ج٤ص١١٧، كشف الخفاء ج١ص٣٨٤) पी लेने के चन्द लम्हों के बा'द ख़ाली गिलास को देखेंगे तो उस की दीवारों से बह कर चन्द क़त़रे पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये ।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساكِر ج٩ص٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

"राहे मदीना का मुसाफ़िर" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से चलने की 15 सुन्नतें और आदाब

❁ पारह **15 सूरए बनी इस्राईल** आयत 37 में इर्शादे रब्बुल इबाद है : وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़हा 435 पर **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा कर चल रहा था और घमन्ड में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, वोह क़ियामत तक धंसता ही जाएगा (صحیح مُسلِم ص۱۱۵۶ حدیث ۲۰۸۸) ❁ सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बसा अवक़ात चलते हुए अपने किसी सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का हाथ अपने दस्ते मुबारक से पकड़ लेते (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج۷ ص ۷۷ حدیث۷۱۳۲) ❁ **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चलते तो किसी क़दर आगे झुक कर चलते गोया कि आप बुलन्दी से उतर रहे हैं (الشمائل المحمدية للترمذی ص۸۷ رقم ۱۱۸) ❁ गले में सोने या किसी भी धात (या'नी मेटल की) चेन डाले, लोगों को दिखाने के लिये गरीबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों, मग़रूरों और फ़ासिक़ों की चाल है। गले में सोने की चेन या ब्रेस्लेट (BRACELET) पहनना मर्द के लिये **ह़राम** और दीगर धातों (या'नी मेटल्ज़) की भी ना जाइज़ है ❁ अगर कोई रुकावट न हो तो रास्ते के कनारे कनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिये, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की त़रफ़ उठें कि दौड़े

दौड़े कहां जा रहा है ! और न इतना आहिस्ता कि देखने वाले को आप बीमार लगें। **अम्रद** का हाथ न पकड़े, शह्वत के साथ किसी भी इस्लामी भाई का हाथ पकड़ना या मुसा-फ़हा करना (या'नी हाथ मिलाना) या गले मिलना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ❁ राह चलने में परेशान नज़री (या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलिये। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अबी सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नमाज़े ईद के लिये गए, जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो अहलिया (या'नी बीवी साह़िबा) कहने लगीं : आज कितनी औ़रतें देखीं ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इस्रार किया तो फ़रमाया : **''घर से निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने (पाउं के) अंगूठों की त़रफ़ देखता रहा।''** سُبْحٰنَ اللّٰه ! **अल्लाह** वाले राह चलते हुए बिला ज़रूरत बिल ख़ुसूस भीड़ के मौक़अ़ पर इधर उधर देखते ही नहीं कि मबादा (या'नी ऐसा न हो) शरअ़न जिस की इजाज़त नहीं उस पर नज़र पड़ जाए ! येह उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तक़्वा था, मस्अला येह है कि किसी औ़रत पर बे इख़्तियार नज़र पड़ भी जाए और फ़ौरन लौटा ले तो गुनाहगार नहीं ❁ किसी के घर की बाल्कनी (BALCONY) या खिड़की की त़रफ़ बिला ज़रूरत नज़र उठा कर देखना मुनासिब नहीं ❁ चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एह़तियात़ कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो, हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को जूतों की धमक ना पसन्द थी ❁ रास्ते में दो औ़रतें खड़ी हों या जा रही हों तो उन के बीच में से न गुज़रें कि ह़दीसे पाक में इस की मुमा-न-अ़त आई

है (ابوداؤد ج٤ ص٤٧٠ حدیث٥٢٧٣) ❁ राह चलते हुए, खड़े बल्कि बैठे होने की सूरत में भी लोगों के सामने थूकना, नाक सिनक्ना, नाक में उंगली डालना, कान खुजाते रहना, बदन का मैल उंग्लियों से छुड़ाना, पर्दे की जगह खुजाना वग़ैरा तहज़ीब के ख़िलाफ़ है ❁ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि राह चलते हुए जो चीज़ भी आड़े आए उसे लातें मारते जाते हैं, येह क़त्अ़न ग़ैर मुहज़्ज़ब त़रीक़ा है, इस त़रह़ पाउं ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा रहता है, नीज़ अख़्बारात या लिखाई वाले डिब्बों, पेकिटों और **मिनरल** वॉटर की ख़ाली बोतलों वग़ैरा पर लात मारना **बे अ-दबी** भी है ❁ पैदल चलने में जो क़वानीन ख़िलाफ़े शर-अ़ न हों उन की पासदारी कीजिये म-सलन गाड़ियों की आ-मदो रफ़्त के मौक़अ़ पर सड़क पार करने के लिये मुयस्सर हो तो "ज़ेब्रा क्रॉसिंग" या "ओवर हेड पुल" इस्ति'माल कीजिये ❁ जिस सम्त से गाड़ियां आ रही हों उस त़रफ़ देख कर ही सड़क उ़बूर कीजिये, अगर आप बीच सड़क पर हों और गाड़ी आ रही हो तो भाग पड़ने के बजाए मौक़अ़ की मुना-सबत से वहीं खड़े रह जाइये कि इस में ह़िफ़ाज़त ज़ियादा है नीज़ रेलगाड़ी गुज़रने के अवक़ात में **पटरियां** उ़बूर करना अपनी मौत को दा'वत देना है, रेलगाड़ी को काफ़ी दूर समझ कर गुज़रने वाले को जल्दी या बे ख़याली में किसी तार वग़ैरा में पाउं उलझ जाने की सूरत में गिरने और ऊपर से रेलगाड़ी गुज़र जाने के ख़त़रे को पेशे नज़र रखना चाहिये नीज़ बा'ज़ जगहें ऐसी होती हैं जहां **पटरी** से गुज़रना ही ख़िलाफ़े क़ानून होता है ख़ुसूसन स्टेशनों पर, इन क़वानीन पर अ़मल कीजिये ❁ इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से ह़त्तल इम्कान रोज़ाना **पौन घन्टा** ज़िक्रो दुरूद के साथ

पैदल चलिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सिह्ह़त अच्छी रहेगी । **चलने का बेहतर त़रीक़ा** येह है कि शुरूअ़ में 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आख़िर में 15 मिनट फिर तेज़ क़दम चलिये, इस त़रह़ चलने से सारे जिस्म को वरज़िश मिलेगी, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ निज़ामे इन्हिज़ाम (या'नी हाज़िमा) दुरुस्त रहेगा, रीह़ (GAS), क़ब्ज़, मोटापा, दिल के अमराज़ और दीगर बे शुमार बीमारियों से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हिफ़ाज़त होगी ।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"शाने इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से तेल डालने और कंघी करने के 19 म-दनी फूल

❁ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सरे अक़्दस में अक्सर तेल लगाते और दाढ़ी मुबारक में कंघी करते थे और अक्सर सरे मुबारक पर कपड़ा (या'नी सरबन्द शरीफ़) रखते थे यहां तक कि वोह कपड़ा तेल से तर हो जाता था (اَلشَّمَائِلُ الْمُحَمَّدِيَّة لِلتِّرمِذی ص٤٠ حديث٣٢) मा'लूम हुवा "सरबन्द" का इस्ति'माल सुन्नत है, इस्लामी भाइयों को चाहिये कि जब भी सर में तेल डालें, एक छोटा सा कपड़ा सर पर बांध लिया करें, इस त़रह़ اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ टोपी और इ़मामा शरीफ़ तेल की आलू-दगी से काफ़ी ह़द तक मह़फ़ूज़ रहेंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का बरसहा बरस से ब निय्यते सुन्नत "सरबन्द" इस्ति'माल करने का मा'मूल है ❁ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों वोह उन का **एह़तिराम** करे" (ابوداؤد ج ٤ ص ١٠٣ حديث٤١٦٣) या'नी उन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج٣ ص ٦١٧) सर और दाढ़ी के बाल साबुन वग़ैरा से धोने का जिन का मा'मूल नहीं होता उन के बालों में अक्सर बदबू हो जाती है ख़ुद को अगर्चे बदबू न आती हो मगर दूसरों को आती है। मुंह, बालों, बदन और

लिबास वग़ैरा से बदबू आती हो इस हाल में मस्जिद का दाख़िला हराम है कि इस से लोगों और फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है। हां बदबू हो मगर छुपी हुई हो जैसे बग़ल की बदबू तो इस में हरज नहीं ❁ हज़रते सय्यिदुना **नाफ़ेअ** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दिन में दो[2] मरतबा तेल लगाते थे (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۸ص۱۱۷) बालों में तेल का ब कसरत इस्ति'माल ख़ुसूसन अहले इ़ल्म हज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में ख़ुश्की नहीं होती, दिमाग़ तर और हाफ़िज़ा क़वी होता है ❁ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ''जब तुम में से कोई तेल लगाए तो भंवों (या'नी अब्रूओं) से शुरूअ़ करे, इस से **सर का दर्द दूर** होता है'' (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر ص۲۸ حدیث ۳۶۹) ❁ ''**कन्ज़ुल उ़म्माल**'' में है : प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब तेल इस्ति'माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते थे, फिर पहले दोनों अब्रूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे (کَنْزُ الْعُمّال ج۷ ص۴۶ رقم ۱۸۲۹۵) ❁ ''**त़-बरानी**'' की रिवायत में है : **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब दाढ़ी मुबारक को तेल लगाते तो ''**अन्फ़क़ह**'' (या'नी निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों) से इब्तिदा फ़रमाते थे (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۵ص۳۶۶ حدیث ۷۶۲۹) ❁ दाढ़ी में कंघी करना सुन्नत है (اَشِعَّۃُ اللَّمعات ج۳ ص۶۱۶) ❁ बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े तेल लगाना और बालों को ख़ुश्क और परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) रखना ख़िलाफ़े सुन्नत है ❁ ह़दीसे पाक में है : जो बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े तेल लगाए तो 70 शयात़ीन उस के साथ शरीक हो जाते हैं (عَمَلُ الْیَوْمِ وَاللَّیْلَۃِ لابن السُّنّی ص۳۲۷ حدیث ۱۷۳) ❁ **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते

सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं, **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मोमिन के शैत़ान और काफ़िर के शैत़ान में मुलाक़ात हुई, काफ़िर का शैत़ान ख़ूब **मोटा ताज़ा** और अच्छे लिबास में था। जब कि मोमिन का शैत़ान **दुबला पतला,** परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) बालों वाला और बरहना (या'नी नंगा) था। काफ़िर के शैत़ान ने मोमिन के शैत़ान से पूछा : आख़िर तुम इतने कमज़ोर क्यूं हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक ऐसे शख़्स के साथ हूं जो खाते पीते वक़्त **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ लेता है तो मैं भूका व प्यासा रह जाता हूं, जब तेल लगाता है तो **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ लेता है तो मेरे बाल परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) रह जाते हैं। इस पर काफ़िर के शैत़ान ने कहा : मैं तो ऐसे के साथ हूं जो इन कामों में कुछ भी नहीं करता लिहाज़ा मैं उस के साथ खाने पीने, लिबास और तेल लगाने में शरीक हो जाता हूं (اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۴۰) ❁ **तेल डालने से क़ब्ल** ''بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم'' पढ़ कर उलटे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालिये, फिर पहले सीधी आंख के अब्रू पर तेल लगाइये, फिर उलटी के, इस के बा'द सीधी आंख की पलक पर, फिर उलटी पर, अब सर में तेल डालिये। और दाढ़ी को तेल लगाएं तो निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों से आग़ाज़ कीजिये ❁ सरसों का तेल डालने वाला टोपी या इ़मामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात बदबू भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह सर में उ़म्दा ख़ुश्बूदार तेल डाले, ख़ुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इ़त्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर

लीजिये, ख़ुश्बूदार तेल तय्यार है । सर और दाढ़ी के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से धोते रहिये ❁ औ़रतों को लाज़िम है कि कंघी करने में या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ऐसा शख़्स जिस से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम न हो) की नज़र न पड़े (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 449) ❁ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोज़ाना कंघी करने से मन्अ़ फ़रमाया । (ترمذی ج۳ص۲۹۳ حدیث ۱۷۶۲) येह नह्य (या'नी मुमा-न-अ़त मक्रूहे) तन्ज़ीही है और मक़्सद येह है कि मर्द को बनाव सिंघार में मश्ग़ूल न रहना चाहिये (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 592) इमाम मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस शख़्स को बालों की कसरत की वजह से ज़रूरत हो वोह मुत्लक़न रोज़ाना कंघी कर सकता है (فیض القدیر ج٦ ص٤٠٤) ❁ बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले सुवाल व जवाब मुला-ह़ज़ा हों, **सुवाल :** कंघा दाढ़ी में किस किस वक़्त किया जाए ? **जवाब :** कंघे के लिये शरीअ़त में कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं है ए'तिदाल (या'नी मियाना रवी) का हुक्म है, न तो येह हो कि आदमी जिन्नाती शक्ल बना रहे न येह हो कि हर वक़्त मांग चोटी में गिरिफ़्तार (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 92, 94) ❁ कंघी करते वक़्त सीधी त़रफ़ से इब्तिदा कीजिये चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर काम में दाईं (या'नी सीधी) जानिब से शुरूअ़ करना पसन्द फ़रमाते यहां तक कि जूता पहनने, कंघी करने और त़हारत करने में भी (بُخاری ج۱ ص ۸۱ حدیث ۱۶۸) शारेह़े बुख़ारी

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी ह़-नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह तीन3 चीज़ें बत़ौरे मिसाल इर्शाद फ़रमाई गई हैं, वरना हर काम जो इ़ज़्ज़त और बुज़ुर्गी रखता है उसे सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है जैसे मस्जिद में दाख़िल होना, लिबास पहनना, मिस्वाक करना, सुरमा लगाना, नाख़ुन तराशना, मूंछें काटना, बग़लों के बाल उतारना, वुज़ू, ग़ुस्ल करना और बैतुल ख़ला से बाहर आना वग़ैरा और जिस काम में येह (या'नी बुज़ुर्गी वाली) बात नहीं जैसे मस्जिद से बाहर आने, बैतुल ख़ला में दाख़िल होने, नाक साफ़ करने, नीज़ शलवार और कपड़े उतारते वक़्त बाईं (या'नी उलटी त़रफ़) से इब्तिदा करना मुस्तह़ब है (عُمدةُ القاری ج٢ص٤٧٦) ❀ नमाज़े जुमुआ़ के लिये तेल और ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 774) ❀ रोज़े की ह़ालत में दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना मक्रूह नहीं मगर इस लिये तेल लगाया कि दाढ़ी बढ़ जाए, ह़ालां कि एक मुश्त (या'नी एक मुठ्ठी) दाढ़ी है तो येह बिग़ैर रोज़े के भी मक्रूह है और रोज़े में ब द-र-जए औला (ऐज़न, स. 997) ❀ मय्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघी करना, ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّمُختار ج٣ص١٠٤) लोग मय्यित की दाढ़ी मूंड डालते हैं येह भी ना जाइज़ गुनाह है। गुनाह मय्यित पर नहीं मूंडने और इस का हुक्म करने वालों पर है।

तेल की बूंदें टपक्ती नहीं बालों से रज़ा

सुब्ह़े आ़रिज़ पे लुटाते हैं सितारे गेसू (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो2 कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे**

शरीअ़त'' ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''गेसू रखना नबिय्ये पाक की सुन्नत है''
के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से
ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा के 22 म-दनी फूल

❁ ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ुल्फ़ें कभी निस्फ़ (या'नी आधे) कान मुबारक तक तो ❁ कभी कान मुबारक की लौ तक और ❁ बा'ज़ अवक़ात बढ़ जातीं तो मुबारक शानों या'नी कन्धों को झूम झूम कर चूमने लगतीं (الشمائل المحمدية للترمذى ص٣٤، ٣٥، ١٨) ❁ हमें चाहिये कि मौक़अ़ ब मौक़अ़ तीनों सुन्नतें अदा करें, या'नी कभी आधे कान तक तो कभी पूरे कान तक तो कभी कन्धों तक ज़ुल्फ़ें रखें ❁ कन्धों को छूने की ह़द तक ज़ुल्फ़ें बढ़ाने वाली सुन्नत की अदाएगी उ़मूमन नफ़्स पर ज़ियादा शाक़ (या'नी भारी) होती है मगर ज़िन्दगी में एकआध बार तो हर एक येह सुन्नत अदा कर ही लेनी चाहिये, अलबत्ता येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि बाल कन्धों से नीचे न होने पाएं, पानी से अच्छी त़रह़ भीग जाने के बा'द ज़ुल्फ़ों की दराज़ी (या'नी लम्बाई) ख़ूब नुमायां हो जाती है लिहाज़ा जिन दिनों बढ़ाएं उन दिनों ग़ुस्ल के बा'द कंघी कर के ग़ौर से देख लिया करें कि बाल कहीं कन्धों से नीचे तो नहीं जा रहे ❁ मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : औ़रतों की त़रह़ कन्धों से नीचे बाल रखना मर्द के लिये **ह़राम** है (तस्हीलन फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 600) ❁ **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मर्द को येह जाइज़ नहीं कि औ़रतों की त़रह़ बाल बढ़ाए, बा'ज़ सूफ़ी बनने वाले लम्बी लम्बी लटें बढ़ा लेते हैं जो उन के सीने पर सांप की त़रह़ लहराती हैं और बा'ज़ चोटियां गूंधते हैं या जूड़े (या'नी औ़रतों की त़रह़ बाल इकठ्ठे कर के गुद्दी की त़रफ़ गांठ) बना लेते हैं येह सब ना जाइज़ काम और ख़िलाफ़े

शर-अ़ हैं। **तसव्वुफ़** बालों के बढ़ाने और रंगे हुए कपड़े पहनने का नाम नहीं बल्कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी पैरवी करने और ख़्वाहिशाते नफ़्स को मिटाने का नाम है (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 587) ❁ औ़रत का सर मुंडवाना ह़राम है (ख़ुलासा अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 664) ❁ औ़रत को सर के बाल कटवाने जैसा कि इस ज़माने में नसरानी औ़रतों ने कटवाने शुरूअ़ कर दिये ना जाइज़ व गुनाह है और इस पर ला'नत आई। शोहर ने ऐसा करने को कहा जब भी येही हुक्म है कि औ़रत ऐसा करने में गुनहगार होगी क्यूं कि शरीअ़त की ना फ़रमानी करने में किसी (या'नी मां बाप या शोहर वग़ैरा) का कहना नहीं माना जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 588) छोटी बच्चियों के बाल भी मर्दाना त़र्ज़ पर न कटवाइये, बचपन ही से इन को ज़नाना या'नी लम्बे बाल रखने का ज़ेह्न दीजिये ❁ बा'ज़ लोग सीधी या उलटी जानिब मांग निकालते हैं येह **सुन्नत** के ख़िलाफ़ है ❁ **सुन्नत** येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए (ऐज़न) ❁ मर्द को इख़्तियार है कि सर के बाल मुंडाए या बढ़ाए और मांग निकाले (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۶۷۲) ❁ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से दोनों[2] चीज़ें साबित हैं। अगर्चे मुंडाना सिर्फ़ एह़राम से बाहर होने के वक़्त साबित है। दीगर अवक़ात में मुंडाना साबित नहीं (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 586) ❁ आज कल क़ैंची या मशीन के ज़रीए बालों को मख़्सूस त़र्ज़ पर काट कर कहीं बड़े तो कहीं छोटे कर दिये जाते हैं, ऐसे बाल रखना **सुन्नत** नहीं ❁ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों वोह उन का **इक्राम** करे।" (ابوداؤد ج ٤ ص ١٠٣ حدیث ٤١٦٣) या'नी उन को धोए, तेल लगाए और

कंघा करे ❀ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सब से पहले **मूंछ** के बाल तराशे और सब से पहले **सफ़ेद बाल** देखा । अ़र्ज़ की : ऐ रब ! येह क्या है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! येह **वक़ार** है ।" अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरा **वक़ार** ज़ियादा कर । (موطّا ج ٢ ص ٤١٥ حديث ١٧٥٦) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : आप से पहले किसी नबी की या मूंछें बढ़ी नहीं या बढ़ीं और उन्हों ने तराशीं मगर उन के दीनों में मूंछ काटना हुक्मे शर-ई न था अब आप की वजह से येह अ़मल सुन्नते इब्राहीमी हुवा (मिरआत, जि. 6, स. 193) ❀ बुच्ची (या'नी वोह चन्द बाल जो नीचे के होंट और ठोड़ी के बीच में होते हैं उस) के अग़ल बग़ल (या'नी आस पास) के बाल मुंडाना या उखेड़ना बिदअ़त है (عالمگیری ج٥ ص٣٥٨) ❀ गरदन के बाल मूंडना मक्रूह है (اَیضاً ص٣٥٧) या'नी जब सर के बाल न मुंडाएं सिर्फ़ गरदन ही के मुंडाएं जैसा कि बहुत से लोग ख़त़ बनवाने में गरदन के बाल भी मुंडाते हैं और अगर पूरे सर के बाल मुंडा दिये तो इस के साथ गरदन के बाल भी मुंडा दिये जाएं (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 587) ❀ चार चीज़ों के **मु-तअ़ल्लिक़** हुक्म येह है कि दफ़्न कर दी जाएं, बाल, नाख़ुन, ह़ैज़ का लत्ता (या'नी वोह कपड़ा जिस से औ़रत ह़ैज़ का ख़ून साफ़ करे), ख़ून (ऐज़न, स. 588, عالمگیری ج٥ ص٣٥٨) ❀ मर्द को दाढ़ी या सर के सफ़ेद बालों को सुर्ख़ या ज़र्द रंग कर देना **मुस्तह़ब** है, इस के लिये मेहंदी लगाई जा सकती है ❀ दाढ़ी या सर में मेहंदी लगा कर सोना नहीं चाहिये । एक ह़कीम के बक़ौल इस त़रह़ मेहंदी लगा कर

सो जाने से सर वग़ैरा की गरमी आंखों में उतर आती है जो बीनाई के लिये मुज़िर या'नी नुक़्सान देह है। ह़कीम की बात की तौसीक़ यूं हुई कि एक बार सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के पास एक नाबीना शख़्स आया और उस ने बताया कि मैं पैदाइशी अन्धा नहीं हूं, अफ़्सोस कि सर में काली मेहंदी लगा कर सो गया जब बेदार हुवा तो मेरी आंखों का नूर जा चुका था ! ❁ मेहंदी लगाने वाले की मूंछ, निचले होंट और दाढ़ी के ख़त़ के कनारे के बालों की सफ़ेदी चन्द ही दिनों में ज़ाहिर होने लगती है जो कि देखने में भली मा'लूम नहीं होती लिहाज़ा अगर बार बार सारी दाढ़ी नहीं भी रंग सकते तो कोशिश कर के हर चार दिन के बा'द कम अज़ कम इन जगहों पर जहां जहां सफ़ेदी नज़र आती हो थोड़ी थोड़ी मेहंदी लगा लेनी चाहिये ❁ **''शर्हुस्सुदूर''** में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : जो शख़्स दाढ़ी में ख़िज़ाब (काले ख़िज़ाब के इ़लावा म-सलन लाल या ज़र्द मेहंदी का) लगाता हो, इन्तिक़ाल के बा'द **मुन्कर नकीर** उस से सुवाल न करेंगे। **मुन्कर** कहेगा : ऐ **नकीर !** मैं उस से क्यूंकर सुवाल करूं जिस के चेहरे पर इस्लाम का नूर चमक रहा है।

(شَرْحُ الصُّدُورص۱۵۲)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में

आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"म-दनी हुल्या अपनाओ" के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से लिबास के 14 म-दनी फूल

पहले **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ❁ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो **बिस्मिल्लाह** कह ले (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۵۹ حدیث ۲۵۰۴) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये

आड़ बनते हैं ऐसे ही येह, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस (या'नी शर्मगाह) को देख न सकेंगे (मिरआत, जि. 1, स. 268) ❁ जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِحَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ[1] तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे (شُعَبُ الْاِیمان ج٥ ص١٨١حدیث٦٢٨٥) ❁ जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ैबो ज़ीनत का लिबास पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ दे, **अल्लाह तआ़ला** उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा (ابوداؤد ج٤ ص٣٢٦حدیث ٤٧٧٨) ❁ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास अक्सर सफ़ेद कपड़े का होता (كَشْفُ الْاِلْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس لِلشَّیْخ عبدالْحَقّ الدّهلَوی ص٣٦) ❁ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती (اَیضاً ص٤١) ❁ **मन्क़ूल** है : जिस ने बैठ कर इ़मामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसे मरज़ में मुब्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं (اَیضاً ص ٣٩) ❁ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) म-सलन जब क़ुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (اَیضاً ٤٣) ❁ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (क़ुरता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (उलट) कीजिये या'नी उलटी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ❁ दा'वते

1 : तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी त़ाक़त व क़ुव्वत के बिग़ैर मुझे अ़त़ा किया ।

इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द 3 सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंग्लियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۷۹) ❁ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिरआत, जि. 6, स. 94) ❁ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने । छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक ''औ़रत'' है, या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۹۳) इस ज़माने में बहुतेरे ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि **पेड़ू** (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ हिस्सा खुला रहता है, अगर कुरते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि जिल्द (या'नी खाल) की रंगत न चमके तो ख़ैर, वरना **ह़राम** है और नमाज़ में चौथाई की मिक़्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी (बहारे शरीअ़त) ख़ुसूसन ह़ज व उ़म्रे के एह़राम वाले को इस में सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है ❁ आज कल बाज़ लोग सरे आ़म लोगों के सामने नीकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **ह़राम** है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की त़रफ़ नज़र करना भी **ह़राम** है । बिल ख़ुसूस खेलकूद के मैदान, वरज़िश करने के

मक़ामात और साहिले समुन्दर पर इस त़रह़ के मनाज़िर ज़ियादा होते हैं । लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर जाने में सख़्त एह़तियात ज़रूरी है ❁ **तकब्बुर** के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है । **तकब्बुर** है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा । अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया । लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि **तकब्बुर** बहुत बुरी सिफ़त है । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 409, رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۷۹)

म-दनी हुल्या

दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो), कली वाला सफ़ेद कुरता सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर । (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना) **दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और **म-दनी हुल्ये** में रहने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । **या अल्लाह !** सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन का दीवाना इ़मामा और ज़ुल्फ़ो रीश में
लग रहा है म-दनी हुल्ये में वोह कितना शानदार

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''इमामा शरीफ़ आक़ा की सुन्नते मुबा-रका है''
के पच्चीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से इमामे के 25 म-दनी फूल

छ फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ❁ इमामे के साथ

दो[2] रक्अ़त नमाज़ बिग़ैर इ़मामे की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج۲ص۲٦٥ حديث۳۲۳۳) ❁ टोपी पर इ़मामा हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा इस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़ता किया जाएगा (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوْطِی ص۳۵۳ حديث۵۷۲۵) ❁ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए के रोज़ इ़मामे वालों पर (اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج۱ص۱٤۷ حديث۵۲۹) ❁ इ़मामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकी के बराबर है (ايضاً ج۲ص٤۰٦ حديث ۳۸۰۵, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 213) ❁ इ़मामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इ़मामे के 70 जुमुओं के बराबर है (ابن عَساكِر ج۳۷ص۳۵۵) ❁ इ़मामे अ़रब के ताज हैं तो इ़मामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इ़मामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है (كَنْزُ الْعُمّال ج۱۵ص ۱۳۳ رقم ٤۱۱۳۸) ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ 1197 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़्ह़ा 660 पर है **:** इ़मामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उलटा किया (या'नी इ़मामा बैठ कर बांधा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं ❁ बांधने से पहले रुक जाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिये वरना एक भी अच्छी निय्यत न हुई तो सवाब नहीं मिलेगा लिहाज़ा कम अज़ कम येही निय्यत कर लीजिये कि रिज़ाए इलाही के लिये बतौ़रे सुन्नत इ़मामा बांध रहा हूं ❁ मुनासिब येह है कि इ़मामे का पहला पेच सर की सीधी जानिब जाए (फ़तावा र-ज़विय्या,

जि. 22, स. 199) ❁ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्‌मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक इ़मामे का शिम्ला उ़मूमन पुश्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शिम्ले होते, उलटी जानिब शिम्ला लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है (اشعةُ اللّمعات ج۳ص ۵۸۲) ❁ इ़मामे के शिम्ले की मिक़्दार कम अज़ कम चार उंगल और ❁ ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक़रीबन) एक हाथ (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 182) (बीच की उंगली के सिरे से ले कर कोहनी तक का नाप एक हाथ कहलाता है) ❁ **इ़मामा क़िब्ला** रू खड़े खड़े बांधिये (كَشْفُ الاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس ص۳۸) ❁ इ़मामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छ गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश **गुम्बद नुमा** हो (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 186) ❁ रुमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह इ़मामा ही हो गया और ❁ छोटा रुमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मक्रूह है (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 299) ❁ इ़मामे को जब अज़ सरे नौ बांधना हो तो जिस त़रह़ लपेटा है उसी त़रह़ खोले और यक्बारगी ज़मीन पर न फैंक दे (عالمگیری ج ۵ص ۳۳۰) ❁ अगर ज़रूरतन उतारा और दोबारा बांधने की निय्यत हुई तो एक एक पेच खोलने पर एक एक गुनाह मिटाया जाएगा (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 214) इ़मामे के 6 तिब्बी फ़वाइद मुला-ह़ज़ा हों : ❁ नंगे सर रहने वालों के बालों पर सर्दी गर्मी और धूप वग़ैरा बराहे रास्त असर अन्दाज़ होती है इस से न सिर्फ़ बाल बल्कि दिमाग़ और चेहरा भी **मु-तअस्सिर**

होता है और सिह्हत को नुक्सान पहुंच सकता है । लिहाज़ा इत्तिबाए सुन्नत की निय्यत से इमामा शरीफ़ बांधने में दोनों जहानों में आफ़िय्यत है ❁ तिब्बी तहक़ीक़ के मुताबिक़ दर्दे सर के लिये इमामा शरीफ़ पहनना बहुत मुफ़ीद है ❁ इमामा शरीफ़ से दिमाग़ को तक़्विय्यत मिलती और हाफ़िज़ा मज़्बूत होता है ❁ इमामा शरीफ़ बांधने से दाइमी नज़्ला नहीं होता या होता भी है तो उस के अ-सरात कम होते हैं ❁ इमामा शरीफ़ का शिम्ला निचले धड़ के फ़ालिज से बचाता है क्यूं कि शिम्ला हराम मग़्ज़ को मौसिमी अ-सरात म-सलन सर्दी गर्मी वग़ैरा से तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम करता है ❁ शिम्ला ''सरसाम'' के मरज़ के ख़तरात में कमी लाता है दिमाग़ के वरम (या'नी सूजन) के मरज़ को सरसाम कहते हैं ❁ **मुहक़्क़िक़े अ़लल इत़्लाक़, ख़ातिमुल मुहद्दिसीन**, हज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

دَسْتارِمُبارَک آنْحَضرَت صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ واٰلِہٖ وسلَّم دَراَکْثَر سَفَیْد بُوْد وَگاہے سِیاہ اَحیاناً سَبْز.

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इमामा शरीफ़ अक्सर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी **सब्ज़** होता था ।

(کَشْفُ الْاِلْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس لِلشَّیْخ عبدالْحَقّ الدّھلَوی ص۳۸)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सब्ज़ रंग का इमामा शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, **रहमतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे अन्वर पर सजाया है, **दा'वते इस्लामी** ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे को अपना शिआर बनाया है, **सब्ज़ सब्ज़ इमामे** की भी क्या बात है ! मेरे मक्की म-दनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर बना

हुवा जगमग जगमग करता गुम्बद शरीफ़ भी सब्ज़ सब्ज़ है ! **आ़शिक़ाने रसूल** को चाहिये कि सब्ज़ सब्ज़ रंग के इ़मामे से हर वक़्त अपने सर को ''सर सब्ज़'' रखें और सब्ज़ रंग भी ''गहरा'' होने के बजाए ऐसा प्यारा प्यारा और निखरा निखरा **सब्ज़** हो कि दूर दूर से बल्कि रात के अंधेरे में भी सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के सब्ज़ सब्ज़ जल्वों के तुफ़ैल जग-मगाता नूर बरसाता नज़र आए ।

नहीं है चांद सूरज की मदीने को कोई ह़ाजत
वहां दिन रात उन का सब्ज़ गुम्बद जग-मगाता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत,

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳٤۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی علٰی محمّد

"अंगूठी के ज़रूरी अह़काम" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से अंगूठी के 19 म-दनी फूल

❁ मर्द को **सोने** की अंगूठी पहनना **ह़राम** है । सुल्त़ाने दो[2] जहान, रह़मते आ-लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सोने की अंगूठी पहनने से मन्अ़ फ़रमाया (صَحیح بُخاری ج ٤ ص٦٧ حدیث ٥٨٦٣) ❁ (ना बालिग़) लड़के को सोने चांदी का ज़ेवर पहनाना **ह़राम** है और जिस ने पहनाया वोह गुनहगार होगा । इसी त़रह़ बच्चों के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना **ना जाइज़** है । औ़रत ख़ुद अपने हाथ पाउं में लगा सकती है, मगर लड़के को लगाएगी तो गुनहगार होगी । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 428, دُرِّمُختار و رَدُّالمُحتار ج ۹ ص۵۹۸) बच्चियों के हाथ पाउं में मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं । ❁ **लोहे** की अंगूठी जहन्नमियों का ज़ेवर है । (ترمذی ج ۳ ص ۳۰۵ حدیث۱۷۹۲) ❁ मर्द के लिये वोही अंगूठी जाइज़ है जो मर्दों की अंगूठी की त़रह़ हो या'नी सिर्फ़ एक नगीने की हो और अगर उस में (एक से ज़ियादा या) कई नगीने हों तो अगर्चे वोह चांदी ही की हो, मर्द के लिये **ना जाइज़** है

(رَدُّالمُحتار ج۹ص۵۹۷) ❁ बिग़ैर नगीने की अंगूठी पहनना **ना जाइज़** है कि येह अंगूठी नहीं छल्ला है ❁ हुरूफ़े मुक़त्तआत की अंगूठी पहनना जाइज़ है मगर हुरूफ़े मुक़त्तआत वाली अंगूठी बिग़ैर वुज़ू पहनना और छूना या मुसा-फ़हे के वक़्त हाथ मिलाने वाले का इस अंगूठी को बे वुज़ू छू जाना जाइज़ नहीं ❁ इसी त़रह़ मर्दों के लिये एक से ज़ियादा (जाइज़ वाली) अंगूठी पहनना या (एक या ज़ियादा) छल्ले पहनना भी **ना जाइज़** है कि येह (छल्ला) अंगूठी नहीं। औरतें छल्ले पहन सकती हैं (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 428) ❁ चांदी की एक अंगूठी एक नग (या'नी नगीने) की, कि वज़्न में साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम हो, पहनना जाइज़ है अगर्चे बे ह़ाजते मोहर, (मगर) इस का तर्क (या'नी जिस को स्टेम्प की ज़रूरत न हो उस के लिये जाइज़ अंगूठी भी न पहनना) अफ़्ज़ल है और (जिन को अंगूठी से स्टेम्प लगानी हो उन के लिये) मोहर की ग़रज़ से (पहनने में) ख़ाली जवाज़ (या'नी सिर्फ़ जाइज़ ही) नहीं बल्कि **सुन्नत** है, हां **तकब्बुर** या ज़नाना पन का सिंगार (या'नी लेडीज़ स्टाइल की टीपटॉप) या और कोई ग़-रज़े मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत मक़्सद) निय्यत में हो तो एक अंगूठी (ही) क्या इस निय्यत से (तो) अच्छे कपड़े पहनने भी जाइज़ नहीं (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 141) ❁ ईदैन में अंगूठी पहनना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779, 780) मगर मर्द वोही जाइज़ वाली अंगूठी पहने ❁ अंगूठी उन्हीं के लिये **सुन्नत** है जिन को मोहर करने (या'नी स्टेम्प STAMP लगाने) की ह़ाजत होती है, जैसे सुल्त़ान व क़ाज़ी और उ-लमा जो फ़तवे पर (अंगूठी से) मोहर करते (या'नी

स्टेम्प लगाते) हैं, इन के इ़लावा दूसरों के लिये जिन को मोहर करने की ह़ाजत न हो **सुन्नत** नहीं अलबत्ता पहनना जाइज़ है। (عالمگیری ج۵ص۳۳۵) फ़ी ज़माना अंगूठी से मोहर करने का उ़र्फ़ (या'नी मा'मूल व रवाज) नहीं रहा, बल्कि इस काम के लिये "स्टाम" बनवाई जाती है, लिहाज़ा जिन को मोहर न लगानी हो उन क़ाज़ी वग़ैरा के लिये भी अंगूठी पहनना **सुन्नत** न रहा ❁ मर्द को चाहिये कि अंगूठी का नगीना हथेली की जानिब और औ़रत नगीना हाथ की पुश्त (या'नी हाथ की पीठ) की त़रफ़ रखे (الهداية ج٤ ص٣٦٧) ❁ चांदी का छल्ला ख़ास लिबासे ज़नान (या'नी औ़रतों का पहनावा) है मर्दों को मक्रूहे (तह़रीमी, ना जाइज़ व गुनाह है) (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 130) ❁ औ़रत सोने चांदी की जितनी चाहे अंगूठियां और छल्ले पहन सकती है, इस में वज़्न और नगीने की ता'दाद की कोई क़ैद नहीं ❁ लोहे की अंगूठी पर चांदी का ख़ौल चढ़ा दिया कि लोहा बिल्कुल न दिखाई देता हो, उस अंगूठी के पहनने की (मर्द व औ़रत किसी को भी) मुमा-न-अ़त नहीं (عالمگیری ج۵ص۳۳۵) ❁ दोनों में से किसी भी एक हाथ में अंगूठी पहन सकते हैं और छुंग्लिया या'नी सब से छोटी उंगली में पहनी जाए (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۹۶) ❁ मन्नत का या दम किया हुवा धात (METAL) का कड़ा भी मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है इसी त़रह़ ❁ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا या अजमेर शरीफ़ के चांदी या किसी भी धात के छल्ले और स्टील की अंगूठी भी जाइज़ नहीं ❁ बवासीर व दीगर बीमारियों के लिये दम किये हुए चांदी या किसी भी धात के छल्ले भी मर्दों के लिये जाइज़ नहीं ❁ अगर किसी इस्लामी भाई

ने धात का कड़ा या धात का छल्ला, ना जाइज़ अंगूठी, या धात की ज़न्जीर (BRACELET-CHAIN) पहनी है तो अभी अभी उतार कर तौबा कर लीजिये और आइन्दा न पहनने का अ़ह्द कीजिये ।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

"मिस्वाक करना सुन्नते मुबा-रका है" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 20 म-दनी फूल

पहले **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ❁ दो रक्अ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है (اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۱ ص۱۰۲ حدیث۱۸) ❁ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है (مُسند امام احمد بن حنبل ج۲ ص۴۳۸ حدیث ۵۸۶۹) ❁ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्हा 288 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं, मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स **मिस्वाक** का आ़दी हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** नसीब न होगा ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़्बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बल्ग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۵ ص۲۴۹ حدیث۱۴۸۶۷) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक

सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी हैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि : "तूने मेरे प्यारे हबीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की हक़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी हक़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को हासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" (مُلَخَّص از لواقح الانوار ص ٣٨) ❁ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : चार[4] चीज़ें अ़क़्ल को बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, **मिस्वाक** का इस्ति'माल, सु-लहा या'नी नेक लोगों की सोहबत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना (حیاۃ الحیوان ج٢ص١٦٦) ❁ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ❁ मिस्वाक की मोटाई छुंगिलया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❁ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ❁ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइ़स बनते हैं ❁ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ❁ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ❁ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक

कीजिये ❁ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़् कम तीन बार कीजिये ❁ हर बार धो लीजिये ❁ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंगिलया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ❁ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ❁ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ❁ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो (माख़ूज़ अज़् फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ❁ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फैंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं । ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा । (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی علٰی محمَّد

"क़ुबूर की ज़ियारत सुन्नत है" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 16 म–दनी फूल

❁ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मैं ने तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था, लेकिन अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो क्यूं कि येह दुन्या में बे रग़बती का सबब और आख़िरत की याद दिलाती है (اِبن ماجہ ج۲ ص۲۵۲ حدیث۱۵۷۱) ❁ क़ुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और **मज़ाराते औलियाए किराम** व **शु–हदाए उ़ज़्ज़ाम** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام की ह़ाज़िरी सआ़दत बर सआ़दत और इन्हें ईसाले सवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा) व सवाब (फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 532) ❁ (**वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसल्मान की **क़ब्र** की ज़ियारत को जाना चाहे तो **मुस्तह़ब** येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में)

दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार **आ-यतुल कुर्सी** और तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साहिबे **क़ब्र** को पहुंचाए, **अल्लाह तआ़ला** उस फ़ौत शुदा बन्दे की **क़ब्र** में **नूर** पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा (عالمگیری ج ٥ ص ٣٥٠) ❁ मज़ार शरीफ़ या **क़ब्र** की ज़ियारत के लिये जाते हुए रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो (ऐज़न) ❁ **क़ब्र** को बोसा न दें, न **क़ब्र** पर हाथ लगाएं (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 522, 526) बल्कि **क़ब्र** से कुछ फ़ासिले पर खड़े हो जाएं ❁ **क़ब्र** को सज्दए ता'ज़ीमी करना **ह़राम** है और अगर इ़बादत की निय्यत हो तो **कुफ़्र** है (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 423) ❁ क़ब्रिस्तान में उस आ़म रास्ते से जाए, जहां माज़ी में कभी भी मुसल्मानों की क़ब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले । **"रद्दुल मुह़तार"** में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है । (رَدُّالْمُحتار ج ١ ص ٦١٢) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है (دُرِّمُختار ج ٣ ص ١٨٣) ❁ कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ातिर मुसल्मानों की क़ब्रें मिस्मार (या'नी तोड़ फोड़) कर के फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लैटना, चलना, खड़ा होना, तिलावत और ज़िक्रो अज़्कार के लिये बैठना वग़ैरा **ह़राम** है, दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये ❁ ज़ियारते क़ब्र मय्यित के **मुवा-जहा** में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो और इस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइंती

(या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 532) ❁ क़ब्रिस्तान में इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो इस के बा'द कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَرِ **तरजमा :** ऐ **क़ब्र** वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं (عالمگیری ج ۵ ص ۳۵۰) ❁ जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह कहे : اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ الَّتِىْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِىَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ اَدْخِلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا مِّنِّىْ **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की ह़ालत में रुख़्सत हुए तू उन पर अपनी रह़मत और मेरा सलाम पहुंचा दे। तो **ह़ज़रते** सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर उस वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुए सब उस (या'नी दुआ पढ़ने वाले) के लिये दुआए मग़्फ़िरत करेंगे (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبه ج۸ص ۲۵۷) ❁ शफ़ीए मुजरिमान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सू-रतुल फ़ातिह़ा, सू-रतुल इख़्लास** और **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ी फिर येह दुआ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ क़ुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा। तो वोह तमाम मोमिन क़ियामत के रोज़ इस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे (شَرْحُ الصُّدُور ص ۳۱۱) ❁ ह़दीसे पाक में है :

''जो ग्यारह बार **सू-रतुल इख़्लास** या'नी قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد (मुकम्मल सूरह) पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर इसे (या'नी ईसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा'' (دُرِّمُختار ج۳ ص ۱۸۳) ❀ **क़ब्र** के ऊपर **अगरबत्ती** न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अ-दबी) और बदफ़ाली है, हां अगर (हाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) **क़ब्र** के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना महबूब (या'नी पसन्दीदा) है (मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482, 525) ❀ आ'ला हज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक और जगह फ़रमाते हैं : ''सहीह मुस्लिम शरीफ़'' में हज़रते **अम्र** बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : ''जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौहा करने वाली जाए न आग जाए'' (مُسلِم ص۷۵ حدیث ۱۹۲) ❀ **क़ब्र** पर चराग़ या **मोमबत्ती** वग़ैरा न रखे, हां रात में राह चलने वालों के लिये रोशनी मक़्सूद हो, तो क़ब्र की एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर **मोमबत्ती** या चराग़ रख सकते हैं ।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' हिस्सा **16** और (2) **120** सफ़हात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

6 जुमादल उ़ख़्रा सि. 1432 हि.

ماخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن پاک	ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور	الشمائل المحمدیۃ للترمذی	داراحیاء التراث العربی بیروت
ترجمۂ کنزالایمان	رضا اکیڈمی ممبئی ہند	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند
صحیح بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	کتاب الورع لابن ابی الدنیا	المکتبۃ العصریۃ بیروت
صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت	تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت
سنن ترمذی	دارالفکر بیروت	اشعۃ اللمعات	
سنن ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	فیض القدیر	کوئٹہ
سنن ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	عمدۃ القاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
موطا امام مالک	دارالمعرفۃ بیروت	مراۃ المناجیح	دارالفکر بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دارالفکر بیروت	ہدایہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	الفتاوی الفقہیۃ الکبری	داراحیاء التراث العربی بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	احیاء العلوم	دارالکتب العلمیۃ بیروت
کنز العمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت	اتحاف السادۃ المتقین	دارصادر بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی عالمگیری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الفردوس بماثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	درمختار	دارالفکر بیروت
جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
کشف الخفاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
عمل الیوم واللیلۃ	دارالکتاب العربی بیروت	کشف الالتباس فی استحباب اللباس	داراحیاء العلوم باب المدینہ کراچی
جامع صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی